हिंदी
(201)
शिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र

कुल अंकः 20

टिप्पणीः (i) सभी प्रश्नों के उत्तर देने अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।

(ii) उत्तर पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर ऊपर की ओर अपना नाम, अनुक्रमांक, अध्ययन केन्द्र का नाम और विषय स्पष्ट शब्दों में लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किसी एक का उत्तर 40-60 शब्दों में लिखिए। 2

(क) कबीरदासजी ने गुरु को कुम्हार और शिष्य को घड़े के समान बताया है। क्या आप इससे सहमत हैं? यदि हाँ तो तर्क सहित उत्तर दीजिए। (पाठ-2 देखें)

(ख) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता एक ओर प्रकृति सौंदर्य दर्शाती है दूसरी ओर समाज के स्वार्थी लोगों पर कटाक्ष भी करती है। तुलनात्मक विवेचन कीजिए। (पाठ-8 देखें)

(ग) 'बहादुर' जैसे लड़कों के साथ सहानुभूति नहीं अपितु समानुभूति अपनानी चाहिए। तर्कसहित उत्तर दीजिए। (पाठ-1 देखें)

(घ) 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' पाठ में महिलाओं का साहस, दृढ़निश्चय, आत्मविश्वास प्रकट हुआ है परंतु क्या आप इससे सहमत हैं कि आज भी हमारे समाज के कुछ हिस्से में भेदभाव किया जाता है? सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए। (पाठ-16 देखें)

2. निम्नलिखित में से किसी एक का उत्तर 40-60 शब्दों में लिखिए। 2

(क) 'जो सच से बेखबर, सपनों में खोया पड़ा है।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए सिद्ध कीजिए कि जीवन में सजग बने रहना अनिवार्य है। (पाठ-12 देखें)

(ख) 'बीती विभावरी जग री' भोर के सौंदर्य पर रचित एक कोमल रागात्मक कविता है, जिसमें कवि ने प्रकृति का सुंदर मानवीकरण किया है।' सिद्ध कीजिए। (पाठ-17 देखें)

(ग) पठन कौशल के विभिन्न चरण रेखांकित कीजिए तथा प्रमाणित कीजिए पठित सामग्री और अपठित सामग्री में अंतर होता है। (पाठ-10 देखें)

(घ) राजकुमार के जीवन-काल और प्रतिमा बनने के बाद की उसकी विचारधारा में परिवर्तन क्यों आया? तर्क सहित लिखिए। (पाठ-13 देखें)

3. निम्नलिखित में से किसी एक का उत्तर 40-60 शब्दों में लिखिए। 2

(क) 'अपना पराया' पाठ पढ़ने के बाद आप स्वस्थ बने रहने के लिए क्या-क्या सावधानियाँ बरतना चाहेंगे? किन्हीं दो सावधानियों के बारे में लिखिए। (पाठ-16 देखें)

(ख) बहादुर बारह-तेरह वर्ष का एक भोला-भाला किशोर है, जिसे परिस्थितिवश घरेलू नौकर बनना पड़ा, अगर आप उसकी जगह होते तो क्या करते? (पाठ-1 देखें)

(ग) 'अभ्यास' के संदर्भ में वृंद ने 'दोहे' पाठ में जो विचार व्यक्त किए हैं, उसके पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क लिखिए। (पाठ-2 देखें)

(घ) आज की प्रतिस्पर्धा के समय में 'इसे जगाओ' कविता का संदेश 'सही समय पर सजग रहना' कितना उपयुक्त सिद्ध होगा? तर्क सहित लिखिए। (पाठ-12 देखें)

4. निम्नलिखित में से किसी एक का उत्तर 100-150 शब्दों में लिखिए– 4

(क) 'बीती विभावरी' कविता में प्रसाद जी ने प्रात: कालीन सौन्दर्य का जो शब्द चित्र खींचा है, उसे ध्यान में रखते हुए अपने आस-पास के प्रात:कालीन दृश्य का शब्द-चित्र अंकित कीजिए। (पाठ-17 देखें)

(ख) 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' पाठ में कल्पना चावला और बचेन्द्रीपाल प्राणों को जोखिम में डालकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करती हैं, आप भी अपने लक्ष्य का निर्धारण करते हुए उसे पाने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रयोग किस प्रकार करेंगे, सविस्तार लिखिए। (पाठ-6 देखें)

(ग) 'सुखी राजकुमार' कहानी में गौरैया राजकुमार की प्रतिमा की करुणा से पसीजकर अपने सारे मनोरंजक कार्यक्रमों को रद्दकर गरीबों की सहायता के लिए तैयार हो जाती है। क्या आप भी दरिद्र एवं असहाय बालकों की सहायता के लिए कोई ठोस कार्यक्रम करना चाहेंगे? क्यों और कैसे? विस्तारपूर्वक लिखिए। (पाठ-13 देखें)

(घ) आपको कभी न कभी किसी ग्राम्य परिवेश में जाने का अवसर अवश्य मिला होगा? उस गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन चन्द्रगहना से लौटती बेर' कविता को ध्यान में रखते हुए करिए। (पाठ-8 देखें)

5. निम्नलिखित में से एक का उत्तर 100-150 शब्दों में लिखिए। 4

(क) आपने 'पढ़ें कैसे' पाठ पढ़ा है। इसमें गद्य और पद्य को पढ़ने के अंतर को समझाया गया है। अपने पाठ्यक्रम के किसी एक गद्य पाठ और किसी एक पद्य पाठ के उदाहरण देकर अंतर को समझाकर लिखिए।

(पाठ-10 देखें)

(ख) 'बहादुर' कहानी के लेखक ने घरेलू नौकरों के प्रति हमारे सामाजिक रवैये का बड़ी बारीकी से वर्णन किया है? क्या आप इस रवैये से सहमत हैं? अगर नहीं तो आप किस प्रकार के परिवर्तन चाहेंगे, कहानी के उदाहरण से स्पष्ट कीजिए। (पाठ-1 देखें)

(ग) 'अपना पराया' पाठ में आपने रोगों और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता के बारे में पढ़ा है। कैंसर जैसी बीमारी से बचने के क्या उपाय आप इस पाठ के आधार पर कर सकते हैं, विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।(पाठ-16 देखें)

(घ) 'दोहे' पाठ में रहीम ने निम्नलिखित दोहे में कुछ बातों के विषय में कहा है कि ये छिपाए नहीं छिपती हैं, कवि ने ऐसा क्यों कहा है प्रत्येक के संदर्भ में तर्कसम्मत उत्तर लिखिए। (पाठ-12 देखें)

खैर, खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीती मदपान।
रहिमन दाबै ना दबै, जानत सकल जहान।

6. नीचे दी गई चार परियोजनाओं में से कोई एक परियोजना तैयार कीजिए। 6

(क) आप जिस क्षेत्र, गाँव या नगर में रहते हैं वहाँ अपने किसी पार्क अथवा चौराहे पर सुप्रसिद्ध लोगों की प्रतिमा लगी देखी होगी। उस प्रतिमा के विषय में एक चार्ट बनाइए और निम्नलिखित आधारों पर सूचनाएँ भरिए–

(i) नाम

(ii) जन्मतिथि

(iii) प्रसिद्धि का कारण

(iv) उनके द्वारा किए गए कार्य

(v) स्थानीय लोगों द्वारा उस प्रतिमा का सम्मान किन अवसरों पर किया जाता है।

(vi) उस प्रतिमा का रख-रखाव।

क्रमांक	सूचना
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	

(ख) हिमालय की सबसे ऊँची चोटी 'एवरेस्ट' पर चढ़ना प्रारंभ से ही चुनौतीपूर्ण था, जिसे अनेक पर्वतारोहियों ने सफलतापूर्वक संपन्न किया। बचेन्द्रीपाल पहली महिला पर्वतारोही हैं जिन्होंने वहाँ पहुँचने में सफलता प्राप्त की। आप किन्हीं 6 पर्वतारोहियों के विषय में निम्नलिखित आधारों पर जानकारी इकट्ठी कीजिए जो एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढ़ सके–

(i) नाम

(ii) देश

(iii) स्त्री / पुरुष

(iv) कब एवरेस्ट पर पहुँचे

(v) उनकी व्यक्तिगत जानकारी

क्रमांक	जानकारी
नाम	
महिला/पुरुष	
कब पहुँचे	
देश	
साथियों के नाम	
व्यक्तिगत जानकारी	

(ग) 'अपना-पराया' पाठ में आपने पढ़ा कि हमारी सभी ज्ञानेन्द्रियाँ किस प्रकार संक्रमण को ग्रहण करती हैं। किन्हीं चार ज्ञानेंद्रियों से सम्बधित रोगों का विवरण निम्नलिखित आधारों पर लिखें।

- ज्ञानेन्द्रिय
- रोग का नाम
- लक्षण
- उपचार

ज्ञानेन्द्रियाँ	रोग	लक्षण	उपचार
1			
2			
3			
4			

(घ) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसका सार एक तिहाई शब्दों में लिखें।

भाषा भावों की वाहिका और विचारों की माध्यम होती है। अतएव किसी भी जाति अथवा राष्ट्र का भावोत्कर्ष और विचारों की समर्थता उसकी भाषा से स्पष्ट होती है। जब से मनुष्य ने इस भू-मंडल पर होश संभाला है, तभी से भाषा की आवश्यकता रही है। भाषा व्यक्ति को व्यक्ति से, जाति को जाति से तथा राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाती है। भाषा द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। राष्ट्र को सक्षम और धनवान बनाने के लिए भाषा और साहित्य की सम्पन्नता और उसका विकास परमावश्यक है।

इस संबंध में प्रेमचंद जी का कथन विचारणीय है–

'नि:संदेह काव्य और साहित्य का उद्देश्य हमारी अनुभूतियों की तीव्रता को बढ़ाना है; पर मनुष्य का जीवन केवल स्त्री-पुरुष प्रेम का जीवन नहीं है। साहित्य केवल मन-बहलाव की चीज़ नहीं है। अब वह केवल नायक-नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनता, किंतु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और उन्हें हल करता है।'

भाषा का भावना से गहरा संबंध है और भावना तथा विचार व्यक्तित्व के आधार हैं। यदि हमारे भावों और विचारों को पोषक रस किसी विदेशी या पराई भाषा से मिलता है तो निश्चय ही हमारा व्यक्तित्व भी भारतीय अथवा स्वदेशी न रहकर अभारतीय अथवा विदेशी ही हो जाएगा। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक साहित्य अपने देश-काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है। उस पर अपने महापुरुषों और चिंतकों का, उनकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही प्रभाव पड़ता है। कोई दूसरा देश-काल और समाज भी उस सुंदर स्वास्थ्यकारी संस्कृति से प्रभावित हो, यह आवश्यक नहीं है। अतएव व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास और उसकी शक्तियों को समुचित गति अपने ही पठन-पाठन में मिल सकती है। इसका कारण यह भी है कि मातृभाषा में जितनी सहज गति संभव है और इसमें जितनी कम शक्ति-समय की आवश्यकता पड़ती है, उतनी किसी भी विदेशी और पराई भाषा में संभव नहीं है।

यह भी सच है कि हमारे देश के प्रतिभाशाली और होनहार लोग पश्चिमी भाषा और साहित्य में अपनी क्षमता को देखकर स्वयं भी चकित रह जाते हैं; जिनकी वह अपनी मातृभाषा नहीं है। यह भी मानना पड़ेगा कि इन परिश्रमी लोगों ने अपनी जो शक्ति, समय और तन्मयता पराई भाषा के लिए खपाई, वह यदि मातृभाषा के लिए प्रयोग की गई होती तो एक अद्‌भुत चमत्कार ही हो गया होता। माइकेल मधुसूदन दत्त का दृष्टांत आपके सामने है। प्रतिभा के स्वामी इस बंगला कवि ने अंग्रेजी में काव्य रचना करके कीर्ति और गौरव कमाने के लिए भारी परिश्रम और प्रयत्न किया। यह तथ्य उनको तब समझ में आया जब वे इंग्लैंड यात्रा के लिए गए। बहुत अच्छा लिखकर भी वह द्वितीय श्रेणी के लेखक और कवि से अधिक कुछ नहीं हो सके। यदि चाहते तो अपनी भाषा में कृतित्व के बल पर वे सहज ही प्रथम श्रेणी के कवियों में प्रतिष्ठित हो सकते थे। यह सब पता चलने के बाद उन्होंने अपनी भाषा में लिखने का निर्णय किया। प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है। श्रीमती सरोजिनी नायडू यदि अपनी मातृभाषा में काव्य रचना करती तो निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्री होने का गौरव प्राप्त करती। मैं देखती हूँ कि उच्च ज्ञान-विज्ञान का माध्यम अंग्रेजी होने पर भी पिछले डेढ़ सौ वर्षों में सौ करोड़ लोगों

में अंग्रेज़ी में एक भी रवींद्रनाथ, शरतचंद्र, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और उमाशंकर जोशी आदि पैदा न हो सके। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की उन्नति की द्योतक होती है।

राष्ट्रभाषा की उन्नति में भी राष्ट्र की उन्नति है। राष्ट्रभाषा में विचार-विनिमय सरल हो जाता है, विदेशों में भी साख बनती है। विदेशी भाषा में ज्ञानर्जन करने में जितने प्रयत्न करने पड़ते हैं, निजभाषा में उससे आधे प्रयत्न में ही प्रवीणता आ जाती है। गांधीजी के शब्दों में–'अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से शिक्षा में कम-से-कम सोलह वर्ष लगते हैं। यदि इन्हीं विषयों की शिक्षा अपनी भाषा के माध्यम से दी जाए तो ज्यादा-से-ज्यादा दस वर्ष लगेंगे। विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर बोझ पड़ता है। यह बोझ हमारे बच्चे उठा तो सकते हैं, लेकिन उनकी कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है। माँ के दूध के साथ जो मीठे संस्कार और मीठे शब्द मिलते हैं, उनके और पाठशाला के बीच में जो मेल होना चाहिए, वह विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने में दूर हो जाता है।'

अब इस सामग्री को चार्ट पर चिपकाकर और हाशिए पर सार-लेखन की प्रक्रिया के बिंदुओं का उल्लेख करते हुए समझाइए कि आपने यह सार उन बिंदुओं के आधार पर कैसे किया है।